लाल किले की प्राचीर से आजादी की पांचवी सालगिरह के अवसर पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का संदेश

--दिनांक:- 15-8-52--

बहिनो और भाइयो,

आज आजाद हिन्द की पांचवी साल गिरह है, पांच बरस हुये, इस मुकाम पर इस पुराने शहर दिल्ली में हम जमा हुये थे, और इसी लाल किले की दीवार पर हमने इस झंडे को उठाया था । एक निशानी थी हिन्दुस्तान के एक नये जमाने की । उसको पांच बरस हुये और इस पांच बरसमें बहुत ऊंच नीच हुई, बहुत कुछ हमने किया और बहुत कुछ हमने नहीं किया, और करना रह गया। तो फिर आज जो हमयहां जमा हूये हैं, फिर से, क्या हमारा फर्ज है ? एक जबरदस्त हमें विरासत मिली, पांच बरस हुये हमको हिन्दुस्तान के करोड़ों को हम , एक वारिस हुये एक शानदार विरासत के जिसका कि नाम हिन्दुस्तान, भारत इंडिया है । लंबी चौड़ी चीज है । हिमालय से लेकर नीचे कन्याकुमारी तक, लेकिन उससे वो बहुत ज्यादा है क्योंकि उसकी पहुंची हजारों बरस पीछे जाती है, तो यह हजारों बरस की कहानी, और हजारों बरस की शान और हजारो बरसों की मुसीबतें सभी हमें मिली ओढने को । और फिर इस लंबी कहानी में सवाल यह था, कि हम लोग जो इस जमाने के रहने वालेहैं, हमारा क्या फर्ज है, इस कहानी का क्या हिस्सा हम करेंगे और क्या लिखेंगे ? ताकी इस शानदार विरासत को हम बढ़ावे, ताकी बाद में जब हमारे बच्चे और बच्चों केबच्चे आयें तो इस जमाने को किस तरह से वो देखें । पांच बरस एक बड़ा जमाना नहीं है ।/किसी मुल्क के इतिहास में, लेकिन इस 5 बरस में भी दुनियां में

और हमारे देश में बड़ी बड़ी बातें हुयी हैं, बड़ी बड़ी मुसीबतें भी हमने उठाई है और यह तो इतिहास लिखने वाले बाद में लिखेंगे कि क्या हमने किया और क्या नहीं किया । हमारा फर्ज पीछे देखने का नहीं है, बल्कि आगे देख के लिए है । क्योंकि आखिर में जो बात यह आवाज हमारे काम में आती है कि अधूरे काम की पुकार है कि जो काम अधूरा रह गया है और उसे पूरा करना है, काम तो देश का कभी पूरा नहीं होता । क्योंकि आपका और हमारा काम क्या है, इस देश में हजारों काम है, हम हजार काम करेंगे, फिरभी हजारों बाकी रहेगें, । काम का हम अंदाजा करें हमने कोई नयी इमारत बनायी, क्या स्कूलबनाया क्या और कोईबड़ा काम किया करे, लेकिन आखिर में काम का अंदाजा यह है कि इस मुल्क मुल्क में कितने लोग हैं, जिनकी के आंखों में आंसू बहते हैं । कितने आंसू हमने पूछे कितने आंसू हमने कम किये, वो अंदाजा है इस मुल्क में तरक्की का, न कि इमारतें हम बनायें न कोई शानदार बात हम और करें, क्योंकि आखिर में यह मुल्क क्या है यह नहीं है हिमालया पहाड़ है, न कन्याकुमारी है, यह मुल्क 36 करोड़ आदमी यों की भलाई और बुराई है । और आखिर में मुल्क है हमारे छोटी उम्र के लड़के लड़कियों और बच्चे । क्योंकि हम और आप, हमारी उम्र के लोग उनका, जमाना तो गुजरता है । अपना हमने फर्ज किया, बुरा या भला, हमारा जमाना गुजरता है, औरऔरों को सामने आना है, जहां तक हममें ताकत है हमारे बाजू में और हाथों में हमने आजादी केमसाल को उठाया और कभी उसको गिरने नहीं दिया, कभी उसको जलील होने नही दिया ।

अब सवाल यह है कि आप में और हिन्दुस्तान केकरोड़ों आदमियों में नौजवानों और बच्चों में कितनी ताकत है, उनके बाजुओं में कि वो भी उसको शान से उठाये रखें और वो भी इस मुल्क की खिदमत करें, औरउसकी तरक्की करें और खासकर हमेशा ध्यान इस बात पर दें कि किस तरह से इस मुल्क के लाखों करोड़ों मुसीबत ज़दा आदमियों के आंसू कैसे पूछें, कैसे उनकी तकलीफ दूर कें, किस तरह वो तरक्की करें । आजकल किस तरह से हमारी नई फौजे बच्चे उनको मौका मिले कि वो ठीक तौर से सीखें, पढ़े लिखें उनका शरीर ठीक हो, मन ठीक हो, और दिमाग ठीक हो, और बढ़कर फिर वो इस मुल्क का बोझा अच्छी तरह से उठाये । यह काम है बड़े काम हैं, जबरदस्त काम है यह काम/कोई खाली कायदे और कानून से गवर्नमेंट के, हुकूम से तो नहीं होते । हां गवर्नमेंट की सब में बड़ी जिम्मेदारी है, लेकिन वो जिम्मेदारी वो अदा नहीं कर सकती जब तक कि मुल्क के सब रहने वाले, उसमें शरीक न हों, उसमें मदद न करें, सहयोग न करें । क्योंकि इतना बड़ा काम कोई खाली गवर्नमेंट की तरफ से नहीं हो सकता जब तक कि सारी जनता उसमें हिस्सा न ले, भाग न ले, और उसमें चाहे आपकी कोई राय हो अलग अलग भी रायें हो किसी बात पर, किसी आर्थिक बात पर किसी राजनैतिक बात पर, तब भी वो बुनियादी काम हमारा और आपका है और साथ मिलकर करना है । हां बाज बातें ऐसी हैं, जो नहीं मिल सकती है जब तक बीच में हमारे उनके बीच में दीवारें हैं । कौन बातें हैं वो हम हरेक मिलकर काम कर सकते हैं, करना चाहिए, क्योंकि आखिर हम सब इस

मुल्क के बच्चे हैं, चाहे हमारा कोई धर्म हो , कोई सूबा हो, कोई पेशा हो कोई काम हो, सभों के ऊपर यह फर्ज है । सब इस आजादी के हिस्सेदार हैं । और इसलिए सब उसे आजादी के जिम्मेदार है, उसके कायम रखने के और बढ़ाने के । तो हम सब है 2 कौन नहीं है, यह तो मैं नहीं कह सकता है कि कोई नहीं है, लेकिन बाज रास्ते ऐसे हैं, जो गलत तरफ हमें ले जाते हैं, वो रास्ते आपस में झगड़े के ससहुद के, वायोलेंस के, क्योंकि आजकल फिर से कही कही आवाजें उठती हैं, कि आपस में झगड़े, आपस में कहा जाता है कि झगड़ा करके लड़ाई लड़ कर एक ऊधम मचा कर मुल्क की तरक्की करेंगे, कौम की तरक्की । एक अनजान पने की आवाज है, या जानबूझकर मुल्क को तबाह करने की आवाज है । हमें और आपको आगाह होना है कि आपस के झगड़े से चाहे कितना ही ऊचां नाम उस का क्यों न हो, चाहे यह क्यों न कहा जावे कि यह मुलक के फायदे के लिए है, आपस के झगड़े से यह मुल्क तबाह होता है । झगड़े भी कई तरह तरह के हैं, ऊंचे ऊंचे नाम हैं कि हम किसानों के लाभ के लिए झगड़ा करते हैं, हम यहां के जो क्या मजदूर भाई हैं, उनके लिए, लेकिन न मजदूर न किसान, झगड़े और फिसाद से और खून बहाने से आगे बढ़ेगा, खाली मुल्क तबाह होगा । दूसरे लोग हैं जो आप जानते हैं जो मजहब और धर्म के नाम से इस किस्म का झगड़ा फिसाद करते हैं जो कि फिरकापरस्ती करते हैं आपने काफी इस सबक को सीखा और समझा कि एक इस तरह से मुल्क तरक्की नहीं कर सकता, इस तरह से कमजोरी और बढ़ेगी । सारी हमारी ताकत और गिरेगी बजाये इसके, आगे बढ़ने के । इन बातों से हमें आगाह रहना है और तीसरी कौम जो उनकी है और खुदगर्ज

लोगों की, जो कि अपने पैसे की लालच में कालाबाजार करें या किसी तरह से धोखेबाजी से झूठ से पैसा बनायें और मुल्क का और औरों का नुकसान करें या किसी तरह से धोखेबाजी से झूठ से पैसा बनायें और मुल्क का और औरों का नुकसान करें। तीन यह रास्ते हैं जो मुल्क को तबाह करते हैं, इन तीन से आपको सम्भालना है। हम एक बड़े मुल्क के रहने वाले हैं, जबरदस्त मुल्क है, जबरदस्त उसका इतिहास है। बड़े मुल्क के रहने वाले, बड़े दिल के होने चाहिए, बड़े रास्ते पर हमें चलना है छुक के नहीं गलत बातों पर नहीं, चालबाजी से नहीं। शान से हमने हिन्दुस्तान को आजाद किया, शान से हमें आगे बढ़ना है। उसको लेकर, शान से हमें यह जो हिन्दुस्तान की आजादी की मशाल है। उनको, औरों को देनी है, जब हमारे हाथ कमजोर हो जायें, ताकि नौजवान हाथ उसको उठायें, हम तो अपना काम पूरा करके फिर हम फिकर नहीं चाहे हम खाक में मिल जायें। लेकिन जब तक ताकत है हाथ में तब तक जिस्म में शरीर में ताकत और बल है उस वक्त तक उस ताकत को इस्तेमाल करें, काम में लायें, इस मुल्क को आगे बढ़ाने में, इस मुल्क के करोड़ों आदमियों की खिदमत करने में और जब ताकत खतम हो गयी तो हमारा काम भी खतम हुआ, तब फिर फिकर नहीं हमारा क्या होता है और लोग आयेंगे।

इसलिए हमें बड़े काम को देखना है इस तरह से, एक सूबे के लिए नहीं, एक फिरके के लिए नहीं, एक जाति के लिए नहीं, मजहब के लिए नहीं, अपने पेशे में रहे, अपने अपने धर्म पर लोग रहें, मजहब पर रहें लेकिन सब में बड़ा पेशा सब में बड़ा धर्म और सब में बड़ा फर्ज हरेक का है हिन्दुस्तान इस बड़े खानदान के

36 करोड़ के, इसकी खिदमत करना, उसको बढ़ाना और हमेशा इस तरह से देखना उसको हमेशा कि हमें जो मुसीबत जदा है, जो गिरे हुये हैं, दबे हुये हैं, उनको उनको उठाना। हमेशा यह सोचना कि हमारा फर्ज है कि हरेक शख्स जिसके आंखों में आंसू है, हिन्दुस्तान में आंसू हो उस आंसू को पोंछना उस आंसू को किस तरह से सुखाना। मुसीबतें गुजरी इस जमाने में हमारे मुल्क में, प्रकृति ने भी मुसीबत भेजी, बारिश नहीं हुई बहुत इन बरसों में, जलजले आये, भूकम्प आये, क्या क्या हुआ आप जानते हैं खैर कुछ पलटा हमने खाया इन बातों पर काबू किया हमने और, और इस साल और सालों के मुकाबले में, जरा हाल हमारा अच्छा हुआ बारिश भी अच्छी हुई। कुछ इस वक्त मुल्क में खाने का सवाल भी अच्छा है, कपड़े का भी अच्छा है, अच्छा है, अच्छा तो है लेकिन फिर भी आप याद रखें कि यह बड़ा मुल्क है और इस बड़े मुल्क में कोई न कोई हिस्सा ऐसा रहता है जहां कोई न कोई मुसीबत आती है आजकल ज्यादातर मुल्क में पानी बरसा, ज्यादातर खेती अच्छी हो रही है, खाने के सामान की पैदावार अच्छी है। लेकिन बाज जिले हैं उत्तर प्रदेश के, गोरखपुर और आजमगढ़ और देवरिया और बस्ती, कुछ उधर जिले हैं, बिहार के, कुछ बंगाल में है सुंदरवन का इलाका, रायलसीमा है मद्रास की तरफ, मैसूर के कुछ जिले हैं, कुछ राजस्थान में, कुछ सौराष्ट्र में, जहां काफी मुश्किल है, काफी फाकेमस्ती है, काफी गरीबी है काफी खाने की कमी है, और हमारा फर्ज होता है उनकी मदद करें हर तरह से और खाली मदद इस तरह से न करें, आरजी मदद लेकिन इस तरह से इंतजाम करें, कि वो अपनी टांगों पर खड़े हो सकें और हम सब मिलकर आगे बढ़े। क्योंकि आखिर में इस हिन्दुस्तान

का बड़ा खानदान जो है 36 करोड़ का हम सब हम सफर हैं, हम कदम होके हम आगे बढ़ना है, एक तरह हमें जाना है, अगर कुछ लोग समझें कि वो उनको छोड़कर आगे बढ़ जायेगी तो वो लोग धोखे में हैं, क्योंकि जो लोग पीछे हैं उनका पीछे रहना औरों को भी रोकेगा इस तरह से हमें करना है ।

मैंने अभी आपसे कहा, तीन खतरनाक बातें हैं एक तो तशद्दुद पैदा करने वाले जो लोग होते हैं दूसरे वो लोग जो कि खुदगर्जी से, चाहे तिजारत में हो चाहे कहीं हो, पैसा बनाते हैं, कालेबाजार में और और तरह से । बेईमानी से, घूस देके, रिश्वत दे के, और लेकर । तीसरे फिरकापरस्ती का । अजीब हालत है, कि इतना हमने इसका सबक सीखा और उस तरह से सोचते हैं, और समझते हैं इस बात में शान कि वो दूसरे मजहब, दूसरे धर्म वालों को नीचा दिखायें, उनको बुरा भला कहें और इस तरह से वो अपनी धर्म और मजहब को उठायेगें । मुझे अभी चन्द रोज हुये एक वाकया हुआ, एक अखबार ने इलाहाबाद में कुछ छापा, एक बदतमीजी की, बेहूदी बात थी, एक जिसको पढ़कर गुस्सा मालूम होता था गुस्सा इसलिए कि इतनी है किसी आदमी में हिन्दुस्तान में कि ऐसी बात करें और फिर उसका जवाब क्याऔर जहालत का बाज लोगों ने दिया । बजाये इसके देखकर कि एक आदमी ने गलती की, वो उसको जो कुछ सजा होदी जाये, इसका जवाब बाज अनजान लोगों ने यह दिया कि अच्छा हम आज 15 अगस्त के इस जलसे में शरीक नहीं होगें, अपनी नाराजगी दिखायेगें । यह कौन सा जवाब है, किसी हिन्दुस्तानी के लिए किसी मौके पर भी । सोचने की बात है पहला फर्ज इस जलसे में शरीक होना न होना, किसी का खास फर्ज नहीं, लेकिन कोई बात करना, जिससे की---------------------

हिन्दुस्तान के आजादी को धक्का लगे, जिससे इस झण्डे की शान कम हो, जिससे, जिस लिये आज के दिन, यह आज का मुबारक का दिन कोई एक रंज का इजहार करे, यह बात बेजा है, यह जो नहीं है किसी के लिए भी चाहे उसके दिल में कितना ही किसी बात का दर्द हो । क्योंकि आखिर में हमें याद रखना है कि हम मिलकर आगे बढ़ते हैं । और करोड़ों में हजारों खराब आदमी, गलत आदमी अनजान, आदमी लाखों जिनकी एक एक गलती हम अपना रास्ता छोड़ दें तो सारा मुल्क बह जाये । याद रखिये कि हिन्दुस्तान की पुरानी संस्कृति क्या है, हिन्दुस्तान की पुरानी तहजीब क्या है, यादरखिये कि आज से सवा दो हजार बरस हुये एक बड़े हिन्दुस्तानी नेक्या कहा, और खाली कहा नहीं बल्कि बड़े पत्थर में मीनारों पर कालमसू पर खोद के लिख दिया । याद हैं आपको, सम्राट अशोक ने क्या कहा, सम्राट अशोक ने बताया था अपने सारे साम्राज्य को इस भारत के लोगों को जो दूसरे के धर्म का दूसरे के मजहब का आदर करते हैं, वो अपने धर्म का आदर करते हैं, जो दूसरे के धर्म का अनादर करते हैं, वो अपने धर्म को भीनीचा करते हैं । इसलिए अगर आप, उन्होंने लिखा था, अगर कोई आदमी अपने धर्म की इज्जत बढ़ाना चाहता है, तो अपने बर्ताव से कैसे वो अपने पड़ौसी के धर्म की इज्जत करता है । यह हिन्दुस्तान की हजारों बरस की संस्कृति रही है, न कि यह जो आजकल कुछ अनजान लोग कहते हैं कि नफरत की, झगड़े की, और लड़ाई की, जरा आजकल की दुनियां की आप देखें, लड़ाई का चर्चा, लड़ाई की तैयारी, अजीब हालत है, मालूम नहीं किस वक्त एक मुसीबत इस दुनियां पर आये । और आधी दुनियां नेस्तोनाबूद हो जाये । हम एक

कमजोर मुल्क हैं, हमने अपनी आवाज अमन के शान्ति के तरफ उठाई कोशिश की और आखिर दम तक हम कोशिश करेंगे, लेकिन अभी हम कर सकते हैं कुछ ताकत से जब हम अपने मुल्क में मिलकर आगे बढ़े । लड़ाई का चर्चा सारी दुनिया में है । लेकिन एक नये किस्म की लड़ाई सभी तो नहीं, लेकिन और दुनियां के तरफ नयी लड़ाई तरफ मैं आपका ध्यान दिलाऊंगा जो इस वक्त दक्षिण अफ्रीका में हो रही क्योंकि वो कुछ इस हिन्दुस्तान से संबंध रखती है । क्योंकि जो तरीका वहां के रहने वालों ने उठाया है वो तरीका इस मुल्क के एक महापुरूष ने हमको सिखाया था, और सहयोग का सत्याग्रह का औरइस वक्त वहां एक बड़े सिद्धात की, बड़े उसूल की लड़ाई है कि इंसान इंसान बराबर है कि नहीं, याउसके बीच में दीवारें है और एक कौम दूसरे कौम पर, एक जाति दूसरी जाति कोदबायें यह वहां एक रंगवाले दूसरे रंगवाले कोदबायें । यह बड़ा सवाल है और वहां इस वक्त हिन्दुस्तानी नहीं वो तो थोड़े है बल्कि अफ्रीका के रहने वालों ने, उस महात्मा जी से सबक को सीखकर वो आगे बढ़े हैं और शान्ति से उनके पुरूष और स्त्री इस काम को उठा रहे हैं और मुझे खुशी है इस बात की कि वहां के जो भारत के रहने वाले भारत से गये हुये लोग वहां है, वह भी उनकी भी पूरा अफ्रीका के रहने वालों के साथ उसमें सहयोग है । और यकीन है मुझे कि आप सब और हिन्दुस्तान का एक एक दिमाग और एक एक दिल उधर देखेंगा और उन लोगों से हमदर्दी रखेगा । तो यह हमारे तरीके है काम करने, जिस तरह से हमने आजादी/हासिल की और जिस तरह से मैं उम्मीद करता हूं कि हमें आइंदा भी कोई आपस में नाइत्तफाकी हो हम उसको हल करें और झगड़े फिसाद

के । इसलिए इस बात को याद रखें आप और आज के दिन, हम फिर से एक बात का इकरार करते आप औरआज के दिन , हम फिर से इस बात का इकरार करें कि हम लोग इस मुल्क को आगे बढ़ायेंगे, और इसके माने अपने को बढ़ायेंगे किसी दूसरे को तो नहीं करते, यह तो एक खुदगर्जी का सवाल है । और इस तरह से हम यह हिन्दुस्तान की पुरानी संस्कृति है, उसको बढ़ायेंगे और इस दुनियां में अमन कायम करने में पूरी हम मदद करेंगे । खासतौर से जो हिनदुस्तान का बड़ा मसला है, यानी यहां की गरीबी और दरिद्रता को दूर करने में पूरी शक्ति से करेगें, पूरा तो हम काम कर नहीं सकते, बहुत बड़ा काम है लेकिन कम से कम जितना हम अपने जमाने में कर सकते हैं, उसको करेगें । फिरऔर हमारे यहां नौजवान आयेगें इस काम को और बढ़ाने के लिए ।

तो इस समय मैं आपसे इत्ता ही कहा चाहता हूं कि हम आज के दिन जरा अपने दिल को साफ करके सोंचे याद करें क्या हम में कमजोरीयां हैं और औरों की कमजोरियों की तरफ न देखें, औरों की नुक्ताचीनी न करें, अपने तरफ देखें, अगर हरेक आदमी अपना अपना कर्त्तव्य करते हैं अपना अपना फर्ज अदा करते हैं, तो दुनियां का काम बहुत आगे जायेगा । लेकिन हमारा कुछ पेशा हो गया है औरों के काम की नुकताचीनी करनी, निंदा करनी , और चाहे अपना काम हमें करें न करें । हरेक को अपने पड़ौसी के काम की फिकर है अपने काम की नहीं, और इससे न पड़ौसी काम कर सकता है, न हम कर सकते हैं, इसलिए हमें मिलकर काम करना है । जरा हम सबक आप सीखें, हमारी फौज से फौज एक खास काम के लिए

मुल्क की खिदमत करने के लिए होती है ।उसमें एक निजाम आता है, डिसिप्लिन आता है, सिखाया जाता है और उसमें हमारी फौज में हमारे देश के हर प्रान्त के हर सूबे के रहने वाले फौज में, हमारे , नेवी में, इयरफोर्स में हर प्रान्त के लोग हैं, हर धर्म मजहब के लोग हैं सब मिलकर काम करते हैं । आपस में झगड़ा तो नहीं करते, हिम्मत से बहादुरी से वो एक नमूना है, हिन्दुस्तान के एकता के इत्तहाद के, इस तरह से कुछ हममें भी एकता और फौजीपन सारे करोड़ों आदमियों में पैदा करना है, किसी से लड़ाई लड़ने को नहीं, लेकिन एक हिन्दुस्तान के बड़े कामों को करने के लिए इस इरादे से हम चलें, कुछ अपना काम करेंगे खाली औरों की या गवर्नमेंट तक पर भरोसा नहीं करेंगें, कि बस हम कर दें, जब इस मुल्क के बड़े काम होते हैं । फिर से मैं आपको आज का दिन, आपको मुबारक हो । आज की पाँचवी आजाद हिन्दु की साल गिरह आपको मुबारक हो, हमें मुबारक हो, लेकिन मुबारक तो जभी हो जब उसमें हम इस बड़े काम को उठायें और जोरों से करें इस आने वाले साल में ।

आइये, मेरे साथ जरा जोर से जयहिन्द तीन बार कहिये । जयहिन्द, जरा जोर से कहिये, जयहिन्द । जनता जयहिन्द कहती है ।फिर से जयहिन्द-----जयहिन्द ।।